ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वार्षिक शुल्क 50/- रु.
आजीवन 500/- रु.
इस अंक का मूल्य 5/- रुपये

आर्य प्रेरणा

(आर्यसमाज राजेन्द्र नगर का मासिक मुख-पत्र)

दूरभाष: 011-25760006

वर्ष-8 अंक 11, मास अगस्त-सितम्बर 2017 विक्रमी संवत् 2074

दयानन्दाब्द 194 सृष्टि संवत् 1960853118

सम्पादक आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

शुद्ध ज्ञान-कर्म-उपासना का परिचय

1. शुद्ध ज्ञान – ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि अनुपम और सर्वाधार है, उसी की उपासना करनी चाहिये।

आत्माएं – अजर, अमर, अल्पज्ञ, अल्पशक्तिमान् और शुभ, अशुभ, मिश्रित व निष्काम कर्मों के आधार पर जन्म-मरण के बन्धन में आने वाली अथवा मोक्ष पद को प्राप्त करने वाली हैं।

प्रकृति – जड़ है, रज, तम तीन प्रकार के गुणों वाली और सृष्टि उत्पत्ति में उपादान कारण है। प्रकृति भी आत्मा और परमात्मा की तरह अनादि और सूक्ष्म है। ईश्वर साध्य, आत्माएं साधक और प्रकृति साधन है।

2. शुद्ध कर्म – फल की इच्छा छोड़कर निष्ठा से अपने-अपने कर्तव्य कर्म को करना, कोई कार्य ईश्वर की, वेद की व अन्तरात्मा (आत्मा) की आज्ञा के विरुद्ध न करना ।

3. शुद्ध उपासना – अहिंसा, सत्य, अस्तेय आदि यम-नियमों का सूक्ष्मता से पालन करते हुए, योग के आठ अंगों का निरन्तर श्रद्धापूर्वक व पूर्ण उत्साह से अभ्यास करना। पाषाण पूजा, पशुबलि व अवतारवाद आदि के चक्करों में न पड़ना ।

स्मरण रहे – ईश्वर सर्वशक्तिमान् का यह अर्थ नहीं कि ईश्वर कुछ भी कर सकता है, क्या वह झूठ बोल सकता है? क्या वह अन्याय कर सकता है? क्या वह स्वयं को मार कर अपने जैसा दूसरा परमात्मा बना सकता है?

सर्वशक्तिमान् का वास्तविक अर्थ है कि वह ईश्वर सृष्टि उत्पत्ति, पालन, प्रलय करने, कर्मफल प्रदान करने व वेदों के ज्ञान देने में पूरी तरह सक्षम है, इसके लिये उसे किसी की सहायता की अथवा अवतार लेने की आवश्यकता नहीं है।

ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गणेश, गणपति, महादेव, इन्द्र, वरूण, यमराज, रूद्र, राहु, केतु, लक्ष्मी, सरस्वती, नारायण आदि सब नाम उसी सर्वव्यापक व निराकार परमात्मा के ही हैं। असंख्य गुणों के आधार पर ईश्वर के असंख्य नाम हैं। इन नामों से अलग-अलग भगवान, देवी-देवता मानना वा उसकी मूर्तियां बनाकर पूजना नादानी है।

वेदों में कितने ईश्वर? कितने देवता?

प्रश्न– वेदों में कितने ईश्वर हैं? हमने सुना है कि वेदों में अनेक ईश्वर हैं?

उत्तर – आपने गलत स्थानों से सुना है। वेदों में स्पष्ट कहा है कि एक और केवल एक ईश्वर है। और वेद में एक भी ऐसा मन्त्र नहीं है, जिसका कि यह अर्थ निकाला जा सके कि ईश्वर अनेक हैं और सिर्फ इतना ही नहीं वेद इस बात का भी खण्डन करते हैं कि आपके और ईश्वर के बीच में अभिकर्ता (एजेंट) की तरह काम करने के लिये पैगम्बर, मसीहा या अवतार, गुरु की जरुरत होती है?

प्रश्न– वेदों में वर्णित विभिन्न देवताओं या ईश्वरों के बारे में आप क्या कहेंगे? 33 करोड़ देवताओं के बारे में क्या कहना है?

उत्तर – जो पदार्थ हमारे लिये उपयोगी होते हैं वो देवता कहलाते हैं। लेकिन वेदों में ऐसा कहीं नहीं कहा गया कि हमें उनकी उपासना करनी चाहिये। ईश्वर देवताओं का भी देवता है और इसीलिये वह महादेव कहलाता है, सिर्फ

'आर्य-प्रेरणा' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

और सिर्फ उसीकी ही उपासना करनी चाहिये।

वेदों में 33 कोटि का अर्थ 33 करोड़ नहीं, बल्कि 33 प्रकार (संस्कृत में कोटि शब्द का अर्थ प्रकार होता है) के देवता हैं। और ये शतपथ ब्राह्मण में बहुत ही स्पष्टतः वर्णन किये गये हैं, जो कि इस प्रकार है– आठ वसु– (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र) जिसमें सारा संसार निवास करता है।

ग्यारह रूद्र – दस जीवनी शक्तियां – अर्थात् (प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनंजय) ये तथा एक जीव ये ग्यारह रूद्र कहलाते हैं।

बारह आदित्य अर्थात् वर्ष के बारह महीने।

एक विद्युत् (बिजली) जो कि हमारे लिये अत्यधिक उपयोगी है।

एक यज्ञ अर्थात् मनुष्यों द्वारा निरन्तर किये जाने वाले निःस्वार्थ कर्म। शतपथ ब्राह्मण के चौदहवें काण्ड के अनुसार इन तैंतीस देवताओं का स्वामी महादेव ही एकमात्र उपासनीय है। लेकिन फिर भी वैदिक शास्त्रों में इतना तो स्पष्ट वर्णन है कि ये देवता ईश्वर नहीं है और इसलिये इनकी उपासना नहीं करनी चाहिये।

ईश्वर अनन्त गुणों वाला है, अज्ञानी लोग अज्ञानतावश उसके विभिन्न गुणों को विभिन्न ईश्वर मान लेते हैं।

यह सारा संसार एक ओर मात्र एक ईश्वर से पूर्णतः आच्छादित और नियन्त्रित है। इसलिये कभी भी अन्याय से किसी के धन की प्राप्ति की इच्छा नहीं करनी चाहिये, अपितु न्यायपूर्ण आचरण के द्वारा ईश्वर के आनन्द को भोगना चाहिये। आखिर वही सब सुखों का देने वाला है। यजुर्वेद 40/1 ।

एक मात्र ईश्वर ही सर्वव्यापक और सारे संसार का नियन्ता है। वही सब विषयों का दाता और सारे संसार का मूल कारण है। सब जीवों को ईश्वर को ऐसे ही पुकारना चाहिये जैसे एक बच्चा अपने पिता को पुकारता है। वही एक मात्र सब जीवों का पालन, पोषण और सब सुखों का देने वाला है। ऋग्वेद 10/48/1 ।

ईश्वर सारे संसार का प्रकाशक है, वह कभी पराजित नहीं होता और न ही कभी मृत्यु को प्राप्त होता है। वह संसार का बनाने वाला है। सभी जीवों को ज्ञान प्राप्ति के लिये तथा उसके अनुसार कर्म करके सुख की प्राप्ति के लिये प्रयत्न करना चाहिये। उन्हें ईश्वर की मित्रता से कभी अलग नहीं होना चाहिये। ऋग्वेद 10/48/5 ।

केवल एक ईश्वर ही सत्य की प्राप्ति के लिये प्रयत्न करने वालों को सत्य ज्ञान का देने वाला है, वही ज्ञान की वृद्धि करने वाला और धार्मिक मनुष्यों को श्रेष्ठ कार्यों में प्रवृत्त करने वाला है। वही एक मात्र इस सारे संसार का रचयिता और नियन्ता है। इसलिये कभी भी उस ईश्वर को छोड़कर और किसीकी भी उपासना नहीं करनी चाहिये। ऋग्वेद 10/49/1 ।

सारे संसार का एक ओर मात्र एक ही निर्माता और नियन्ता है। एक वही पृथ्वी, आकाश और सूर्यादि लोकों का धारण करने वाला है, वह स्वयं सुखस्वरूप है। एक मात्र वही हमारे लिये उपासनीय है। – यजुर्वेद 13/4 ।

वह न दो है, न ही तीन, न ही चार, न ही पांच, न ही छः न ही सात, न ही आठ, न ही नौ और ही दस है। इसके विपरीत वह सिर्फ और सिर्फ एक ही है। उसके सिवाय और कोई ईश्वर नहीं है। सब देवता उसमें निवास करते हैं और उसी से नियन्त्रित होते हैं। इसलिये केवल उसी की उपासना करनी चाहिये और किसी की नहीं। – अथर्ववेद 13/4/16/–21 ।

मात्र एक ईश्वर ही सबसे महान् है और उपासना करने योग्य है, वही समस्त ज्ञान और क्रियाओं का आधार है। – अथर्ववेद 10/7/38 ।

ईश्वर संसार के कण–कण में व्याप्त है, कोई भी स्थान उससे खाली नहीं है, वह स्वयंभू है और अपने कर्मों को करने के लिये उसे किसी सहायक, पैगम्बर, मसीहा या अवतार की जरुरत नहीं होती जो जीव उसका अनुभव कर लेते हैं वो उसके अन्धनरहित मोक्ष सुख को भोगते हैं।

वेदों में ऐसे असंख्य मन्त्र हैं जो कि एक ओर मात्र एक ईश्वर का वर्णन करते हैं और हमें अन्य किसी अवतार, पैगम्बर या मसीहा की शरण में जाये बिना सीधे ईश्वर की उपासना का निर्देश देते हैं। ईश्वर के भिन्न–भिन्न नामों से भिन्न–भिन्न देवी–देवताओं की मूर्तियां बनाकर पूजना अज्ञानता है।

–डॉ. सुदर्शन, उड़ीसा

सद् व्यवहार बिन्दु

1. व्यवहार एक ऐसा आभूषण है जो ज्ञान को सुशोभित करता है, संसार में स्वयं के मार्ग को सरल बनाता है।
2. जैसे बुरे व्यवहार का बुरा प्रभाव पड़ता है, वैसे ही अच्छे व्यवहार का अच्छा प्रभाव पड़ता है।
3. जो व्यवहार अपने लिये, ठीक न लगे, उसे दूसरों के लिये भी नहीं करना चाहिए।
4. दुनिया में तमाम अच्छे व्यवहार, अच्छे लोगों के छोटे–छोटे त्यागों से बनते हैं।
5. शिष्टता का प्रभाव दूर–दूर तक जाता है, सब से अच्छी बात यह है कि, इस में कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ता।
6. हमारा व्यवहार ही है, जो हमारी छवि, दूसरों के मन में बसाता है। इस के द्वारा हम शत्रुओं को भी मित्र और मित्रों को भी शत्रु बना लेते हैं।
7. मनुष्य और पशु में केवल व्यवहार का ही अन्तर है। अन्यथा शेष बातें प्राकृतिक कर्म समान हैं। खाना पीना, सोना जागना, वंश वृद्धि कर्म समान हैं।
8. व्यवहार कुशलता मानव का सर्व श्रेष्ठ गुण है। जीवन की सफलता का उत्कृष्ट साधन भी है।

–श्रीमती सावित्री शर्मा, प्रधाना
आर्य स्त्री समाज, राजेन्द्र नगर,
नई दिल्ली

सम्पादकीय

-आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

विगत अगस्त मास आर्यों के लिए अतीव महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस मास में वेद पारायणयज्ञों तथा वेदों के प्रचार-प्रसार के लिए देश-विदेश की सभी आर्य समाजों में विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। वेदों में प्राणिमात्र के लिए परमात्मा द्वारा प्रदत्त निर्भ्रम, पवित्र ज्ञान का उपदेश किया गया है, जिसके स्वाध्याय, चिन्तन-मनन द्वारा जीवात्मा धर्मार्थकाममोक्ष रूप फलों को प्राप्त कर दुःख से आत्यन्तिक निवृत्ति पा सकता है। वेदों में स्थित यह पवित्र ज्ञान मानव मात्र के लिए है। अन्य साम्प्रदायिक ग्रन्थों की तरह इसमें जाति, धर्म, वर्गवाद के लिए कोई स्थान नहीं है। जगद् रचयिता परमात्मा संसार के समस्त मनुष्यों को वेद के स्वाध्याय का अधिकार देता है किसी जाति या सम्प्रदाय विशेष को नहीं। महर्षि दयानन्द ने वेदों का पुनरुद्धार करके प्राणिमात्र को इसके स्वाध्याय की प्रेरणा दी क्योंकि सबका हित इसमें सन्निहित है। इस श्रावणी पर्व के अवसर पर प्रत्येक आर्य और आर्य समाज परमात्मा की इस वेदवाणी के प्रचार-प्रसार का पावन संकल्प लेकर इस कर्तव्य की पूर्ति के लिए पुरुषार्थ करता है। वैदिक साहित्य के स्वाध्याय, कथा-प्रवचन तथा ज्ञानी पुरुषों की सत्संगति से जीवन को सही ढंग से जीने की कला प्राप्त होती है। महर्षि का यह दृढ़ मन्तव्य है कि- **"वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"** जब तक आर्य जाति अपने इस धर्म के पालन में लगी रही, सारा विश्व और मानव समाज सुख की पराकाष्ठा पर रहा। कालक्रम से जैसे-जैसे स्वाध्याय हीनता का प्रमाद बढ़ता गया, मानव जाति नाना प्रकार के मतों, सम्प्रदायों में विभक्त होकर पथभ्रष्ट और दुःख ग्रस्त होती गई। अतएव हमारे पूर्वज ऋषियों ने आत्मशुद्धि और आत्म कल्याण के लिए वेदों का स्वाध्याय अनिवार्य बताया है। देश और समाज कल्याण के लिए समर्पित आर्य समाज जैसी परोपकारिणी संस्था का यह कर्तव्य है कि वह सारे मानव समाज को वेद और वैदिक धर्म की शिक्षाओं से परिचित कराये। इसके लिए आर्यों को सजगता के साथ आगे बढ़ना होगा तभी "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के लक्ष्य की प्राप्ति हो सकेगी। इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए महर्षि ने आजीवन पुरुषार्थ किया। वे संसार के कल्याण के महत्वपूर्ण साधन के रूप में वेद और वैदिक ज्ञान को ही मानते थे। उनका यह दृढ़ विश्वास था कि वेद निर्भ्रम और स्वतः प्रमाण हैं। ऋषि अपनी कालजयी कृति **"ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका"** में लिखते हैं- **" क्योंकि वेद ईश्वर के रचे हुए हैं और ईश्वर सर्वज्ञ, सर्व विद्यायुक्त, तथा सर्वशक्ति वाला है, इसलिए उसका कथन ही निर्भ्रम और प्रमाण के योग्य है। और जीवों के बनाये ग्रन्थ स्वतः प्रमाण के योग्य नहीं होते, क्योंकि वे (जीव) सर्व विद्यायुक्त और सर्वशक्तिमान नहीं होते, इस लिए उनका कहना स्वतः प्रमाण के योग्य नहीं हो सकता।"** महर्षि की इस मान्यता को ध्यान में रखकर सभी आर्य जनों को इसके लिए कृत संकल्प होना चाहिए तभी इस पर्व को मनाने की सार्थकता है।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

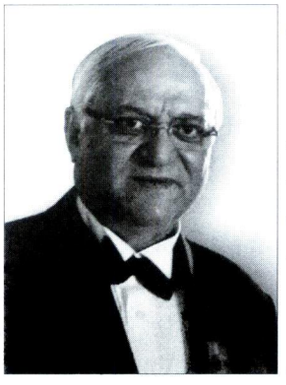

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" एवं **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** के शान्ति इत **"परोपकाराय सतां विभूतयः"** उक्त नीति वाक्यों के अक्षरशः पालक, सौम्यमूर्ति, वैदिक धर्म के निष्ठावान भक्त, कल्याण मार्ग के पथिक तथा आर्य जगत के आधार स्तम्भ श्री के.एल. गंजू जी का एक आजीवन संघर्षरत योद्धा की भांती पुरूषार्थ युक्त जीवन है।

आत्मार्थं जीवलोकेऽस्मिन् को न जीवति मानवः
परं परोपकारार्थं यो जीवति
स जीवति ।।

अर्थात् इस जीव लोक में स्वयं के लिए कौन नहीं जीता? परंतु, जो व्यक्ति परोपकार के लिए जीता है, वास्तव में जीना उसी का जीना है।

उक्त श्लोक के **"परं परोकारार्थं यो जीवति स जीवति"** यह पद आपके जीवन में अक्षरशः दृष्टिगोचर होता है।

आपको आपके कार्यों हेतु अनेक पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए यथा-इंटरनेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ एजुकेशन एवं मैनेजमेंट के साथ ऐसोसिएशन में 3, अक्टूबर 2013 को भारतीय एकता परिषद् द्वारा "गोल्ड मेडल एंड नेशनल गोल्ड स्टार अवार्ड" से सम्मानित किया गया तथा अंतर्राष्ट्रीय राजनयिक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए एमिटी इंटरनेशल युनिवर्सिटी, नोएडा (भारत) द्वारा स्वर्ण पदक एवं सम्मान प्राप्त हुआ। ऐसे कई पुरस्कार व सम्मान आपको देश तथा विदेशों में भी प्राप्त हुए।

आप वैदिक धर्म और आर्य समाज के लिए समर्पित श्रद्धालु, उदारमान, पवित्रात्मा, सेवाभावी सज्जन है। आप संस्कार, संस्कृति एवं संस्कृत की रक्षा के प्रबल समर्थक हैं। अतः आप संस्कृत, संस्कृति एवं संस्कार के रक्षार्थ आर्यसमाज ओल्ड राजेन्द्र नगर के छात्रवृति कोष में यथासमय यथोचित सहायता देते रहते हैं, जिससे उपर्युक्त कार्यों में संलग्न छात्र-छात्राओं को सहयोग प्राप्त हो सके। कहा भी गया है :-

"भवन्ति नम्रस्तरवः फलोद्गमैः
नवाम्बुभिर्दुरविलम्बिनो घनाः ।
अनुछताः सत्पुरूषाः समृद्धिभिः
स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् ।।"

अर्थात् जिस प्रकार वृक्षों पर फल के आने से वृक्ष नम्र हो जाते हैं (झुक जाते हैं) पानी से भरे बादल वर्षा करते है (आकाश से /ऊपर से नीचे आते है) तथा अच्छेलोग समृद्धि से गविष्ठ नहीं बनते, परोपकारियों का यह स्वभाव ही होता है।

आप जैसे व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति को पाकर आर्य समाज राजेन्द्र नगर हर्षित, पुलकित व गौरवान्वित है।

-सुनील आर्य जी

सोचते हैं करते नहीं

(हिन्दी दिवस पर विशेष)

कैलाश चन्द्र शास्त्री

देश को स्वतन्त्र हुए 67 वर्ष हो गये, फिर भी हम जहाँ खड़े थे वहीं खड़े हैं। एक युग बीत गया लेकिन मानसिक दासता बनी हुई है। राष्ट्र भाषा, संस्कृति, सभ्यता, रहन-सहन का पाश्चात्य अन्धानुकरण देश को खड्डे में डाल देगा। भूमिका की आवश्यकता नहीं है। सभी जानते हैं 14 सितम्बर हिन्दी दिवस है। तोते की तरह रटकर बड़े ही गौरव से कहते हैं हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, हिन्दी माथे की बिन्दी है इत्यादि...। किसी आदर्श वाक्य को बोलना अलग है और उसे व्यवहार में लाना और बात है। आदर्शों की रक्षा व्यवहार से होती है न कि भाषणों से, घोषणाओं से, लेखों से एवं कानून बना देने से।

यदि भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी है तो इसी भाषा में देश के न्याय, कानून, राजकाज आदि होना चाहिए। हमारी शिक्षा मातृभाषा में होनी चाहिए। न्यायालय की भाषा अंग्रेजी न होकर हिन्दी होनी चाहिए। मुट्ठी भर आदमी जिस भाषा को बोलते और समझते हैं उस अंग्रेजी के द्वारा सारी प्रजा का कार्य नहीं किया जा सकता। प्रजा की सम्मति उसी भाषा में प्रकट होनी चाहिए, जिसे वह समझती है। बड़े गर्व से कहते हैं गणतन्त्र है प्रजातन्त्र है। प्रजातन्त्र है तो प्रजा का शासन उसी भाषा में होना चाहिए, जिसको वह बोलती हो। सैम पित्रोदा ने तो पहली कक्षा से अंग्रेजी भाषा को अनिवार्य रूप से पढ़ाने के लिए सिफारिश कर दी और सरकार ने मान ली। संघलोक सेवा आयोग जैसी संस्था की सर्वोच्च प्रशासनिक सेवा परीक्षा में अंग्रेजी को अनिवार्य करने का षडयन्त्र किया जा रहा है। विश्व के सभी विकसित देशों चीन, जापान, फ्रान्स, जर्मनी, रूस आदि देशों में सम्पूर्ण शिक्षा अपनी मातृभाषा में ही दी जाती है। पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने कहा है- 'मैं आज वैज्ञानिक बन सका हूँ, क्योंकि मैं अपनी मातृभाषा में पढ़ा हूँ। ध्यान रखना-

मा, मातृभूमि और मातृभाषा का कोई विकल्प नहीं होता।

यूनेस्को की 1953 की रिपोर्ट के अनुसार विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़ने वाला तथा वार्ता करने वाला व्यक्ति अपना व्यक्तित्व खोकर दूसरों का नकलची बन जाता है। टैगोर, तिलक, महामना मालवीय, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, बिनोवा भावे, डॉ. कलाम, प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु, सुपर कम्प्यूटर के जनक डॉ. विजय भटकर, मेघनाद साहा, सरदार पटेल जैसे स्वनाम धन्य महापुरुषों की शिक्षा मातृभाषा में हुई थी। संसद में बैठे हुए अंग्रेजों के मानस पुत्र जिनको देश का कर्णधार कहा जाता है वस्तुतः वे सब देश का बंटाधार करने में लगे हैं। न केवल वे नेता दोषी हैं अपितु वे सभी लोग देश द्रोही हैं जिन्होंने अपने आत्मीय सम्बन्धों एवं दैनिक व्यवहार को अंग्रेजी में परिवर्तित कर दिया है।

आज जरुरत है कि कम से कम आप मम्मी, डैडी, अंकल, आंटी, प्रिंसिपल, मास्टर, टीचर, हेलो, हैप्पी बर्थ डे टू यू, गुड मोर्निंग, ब्रेक फास्ट, लंच, डिनर जैसे शब्दों को तो अपने घरों से निकाल फेंक सकते हैं। अंग्रेजी बोलने से गौरव नहीं बढ़ता अपितु बौद्धिक दरिद्रता झलकती है। अंग्रेजी बिना सिर पैर की दरिद्र भाषा है। जिसका कोई अपना एक स्थायी जीवन दर्शन एवं मूल्य नहीं है उसी भाषा से शिक्षा देना नैतिक पतन को निमन्त्रण देना है। क्योंकि बिना मूल्यों की शिक्षा सुगन्ध हीन फूल जैसी है।

कम से कम आप यह तो कर सकते हैं -

1. हस्ताक्षर अपनी भाषा (हिन्दी आदि) में करें न कि अंग्रेजी में। हस्ताक्षर व्यक्तित्व एवं मानसिकता की पहचान है।
2. कार्यालय, दुकान में नाम पट्टिका, नाम पट्ट (बोर्ड) रसीद, रबड़ की मोहर आदि अपनी भाषा में ही बनवायें।
3. विवाह संस्कार आदि के निमन्त्रण पत्र संस्कृत, हिन्दी एवं अपनी मातृभाषा में छापें एंव छपवायें।
4. बच्चों को आवेदन पत्र मातृभाषा में या हिन्दी में लिखवायें एवं स्वयं भी लिखें।
5. बैंक, विद्यालय, कार्यालय आदि के काम हिन्दी में करें एवं करवायें।
6. लोगों को जागरुक करें एवं क्रान्ति लायें। समाचार पत्र, इन्टरनेट, फेसबुक के माध्यम से हिन्दी को बढ़ावा दें।
7. अपना मतदान उस को करें जो अपनी भाषा या हिन्दी का समर्थक हो, न कि अंग्रेजी का।

आज जरुरत है सोया पड़ा स्वाभिमान को जगाने की। सुधार तो पहले अपना करना चाहिए बाद में दूसरों का। सोचते तो सभी हैं लेकिन करते नहीं। आशा है भारत देश के नागरिक अपने गौरव को जीवित एवं जागृत रखेंगे।

भजन

एक महिला ने एक महिला से पूछा कि तुझे तेरे पति बहुत आदर देते हैं, तब उस महिला ने बताया कि बहन तू इसे ध्यान से सुन लें।

प्रातः काल की अमृत बेला में बहन मैं उठ जाती हूँ ।
शौचादि से निवृत होकर ताजा जल से नहाती हूँ ।
चौका बर्तन कूड़ा-करकट स्वयं बुहारी लाती हूँ ।
प्रातः शाम नित अपने घर में सन्ध्या-हवन रचाती हूँ ।
मौसम के अनुकूल बहन मैं भोजन सदा बनाती हूँ ।
शाम-सवेरे प्राणनाथ को भोजन आप खिलाती हूँ ।
सुबह-शाम सासू को जाकर के शीश झुकाती हूँ ।

-भलेराम आर्य, रोहतक हरियाणा

दुःख विनाशक

प्रायः देखा गया है कि दुःख के तीन कारण होते हैं, 1. अभाव, 2. अन्याय और 3. अज्ञान । यदि कोई व्यक्ति इन तीनों में से एक दुःख का निवारण करने में भी समर्थ हो जाये तो वह मृत्यु को जीत सकता है। ऐसा व्यक्ति अमृत तत्व को प्राप्त कर सकता है। यह असम्भव नहीं है, यह मनुष्य के वश में है।

यह सम्भव है – प्रभु भक्ति से प्रभु भक्ति के लिये ब्रह्मचर्य का पालन अपेक्षित है। इन सब बातो के लिये परब्रह्म के लिये भूख होनी चाहिये जैसे शरीर में जब भूख लगती है तो वह रोटी के लिये लालायित होता है, वह रोटी–रोटी चिल्लाता है वैसे ही यदि हम में ब्रह्म को पाने, उस अमृत तत्व को प्राप्त करने और उस परम प्यारे के दर्शन करने की भूख पैदा हो जाये तो यह सम्भव है और उसका ज्ञान हो जाने से सभी दुःख दूर हो सकते हैं। हम उसका अभाव महसूस करें और उसके दर्शनार्थ प्रयत्नशील हो जाये।

प्रभु के दर्शन का अर्थ है ज्ञान वह कोई स्थूल वस्तु नहीं है जिसके दर्शन होंगे वह तो निराकार परब्रह्म है जो प्रकाश रूप है। हमे तो केवल अंधकार के पर्दे को फाड़ देना है और प्रकाश को पाना है। वेद–वचन में प्रार्थना की गयी है–

ओ असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय ।

हम प्रभु से प्रार्थना करते है कि – **दूर कर द्रुत तिमिर भगवन शुक्र ज्योति विद्वान दो ।।**

अर्थात हे प्रभु हमारे अधंकार (अज्ञान) को शीघ्र से शीघ्र दूर कर दो क्योकि यह अंधकार (अलाव) ही सब दुःखों का कारण है और आपका प्रकाश (तान) ही सर्व प्रकारेण सुखदायक है।

हमने जीवन में अनुभव किया है कि आदर्श और यथार्थ में बहुत अंतर होता है आदर्श कहता है ऐसा होना चाहिए परन्तु यथार्थ में वेसा होता नही है उसके विपरीत हो जाता है, फिर कहना पड़ता है कि जिस विधि परमात्मा रखेगा उसी विधि रहना पड़ेगा। परन्तु संसार में दुःखों से निजात पाने का प्रभु स्मरण के सिवाय कोई चारा भी तो नहीं है इस बात का उल्लेख सभी हिन्दू ग्रंथों में किया गया है। संसार के सभी धंधों–झझटों को करते हुए किसी नवयुवक से परमात्मा की बात तक नहीं कर सकते। उसकी प्रतिक्रया तत्काल होती है कि जीवन बहुत लम्बा है, बुढ़ापे में परमात्मा की याद करेगें। हमने अपने जीवन काल से बहुत कम लोगों को उम्र में शरीर छोड़ जाते देखा है। जीवन की अवधि के बारे में ऐसी कोई धारणा नहीं बनानी चाहिए। मैं तो समझता हूँ कि जीवन को एक दिन का समझ कर जीना चाहिए और उसमें उत्तम से उत्तम कर्म करने चाहिए तभी दुःख से भी छुटकारा मिल सकताहै।

जीवन में दुःखों का मूल कारण है स्वार्थ, स्वार्थ में अंधा व्यक्ति घिनोने से घिनोने कर्म कर बैठता है। आज व्यक्ति संसार की बिलासता की सामग्री इक्ट्ठी करने में लगा है जिसका कोई अन्त नहीं है। असली सुख है ईश्वर के ध्यान में। उसके दर्शन की अभिलाषा बनी रहनी चाहिए व्यक्ति चरित्रवान हो, प्रभु के आदेशों का पालन करे उसके गुणों को अपने जीवन में क्रियान्वित करे और अपनी अपेक्षाऐं अपने साधनों के अनुरूप रखे तो वह सुख से अपना जीवन यापन कर सकता है। प्रभु सिमरण करना पड़ेगा।

इस में भी कोई संदेह नहीं कि प्रभु की याद दुःख में ही आता है तो फिर जो व्यक्ति सुखी है धन धान्य से सम्पन्न है वह प्रभु का सिमरण कैसे करेगा। उसका भी उपाय बताया है कि वह दूसरे का दुःख ले, उसके दुःख का निवारण करे। कहा भी है –

वैष्णव जन तो तेने कहिए जो पीर पराई जाने रे ।
पर दुःखे उपकार करे तो ये मन अभिमान न आणे रे ।।

हम ने भी कई ग्रथों में पढ़ा है कि जीवन का लक्ष परोपकार करना है, परन्तु जिन लोगों का अध्यात्म् से कोई लेना देना नहीं वे तो इसी संसार को अनगिनत समय तक भोग की वस्तु मान कर संसारिक विलासिता की वस्तुओं सुखों की इकटठा करने में लगे है। वे यह महसूस ही नहीं करते कि जीवन क्षणभंगुर है। यह कर्मभूमि है, यह जीवन कर्मानुसार चलता है।

हमने अपने जीवन काल में उतार–चढ़ाव देखे है। हमारे सामने देश का विभाजन हुआ। हमने चर–अचर का नाश होते देखा। इंसानियत का खून होते देखा। करोड़ों–अरबों की सम्पत्ति नष्ट हो गयी। धन–धान्य से सम्पत्ति व्यक्ति कुछ ही समय में कंगाल हो गये, तभी यह प्रश्न पैदा हुआ कि यह धन किसका?

–ओमप्रकाश सलूजा
आर. 617 न्यू राजेन्द्र नगर

समाचार समीक्षा

घर–घर यज्ञ रचाएगें

हजारों ने किया वेदगंगा में स्नान ।

आर्य समाज मन्दिर मॉडल टाउन नई दिल्ली के द्वारा त्रिदिवसीय वेदप्रकथा यज्ञ का अयोजन किया गया, यज्ञ के ब्रह्मा एवं वेदप्रवचन आर्य जगत् के युवा विद्वान् आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न किया गया।

– कृष्णदेव आर्य (मंत्री)

स्वतन्त्रता दिवस यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न

आर्य समाज प्रताप नगर नई दिल्ली के द्वारा 14 अगस्त 2017 को स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में विद्यार्थियों का यज्ञापेवीत संस्कार सम्पन्न हुआ जिसमें आर्य जगत के राष्ट्रीय कथाकार आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी का क्रान्तिकारी उदबोधन हुआ। मुख्य अतिथि डॉ. अनिल आर्य जी ने अपने विचारों से अवगत कराया है। इस अवसर पर आर्य समाज के गणमान्य लोग उपस्थित थे, प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– केवल कृष्ण सेठी (प्रधान)

तप और त्याग की मूर्ति

निर्वाण 14-07-2008

आर्य समाज राजेन्द्र नगर के स्तम्भ आर्यमाता स्व. श्रीमती वैष्णो देवी सहगल जी की पावन स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में 16 जुलाई 2017 को सत्संग हॉल में आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी ने अपने उद्‌बोधन में कहाँ कि माता वैष्णों देवी जी सहगल एक मधुर भाषी विनम्र स्वाभाव, स्वाध्यायशील और वैदिक विचारधारा से ओतप्रोत महान् विभूति थीं। माता जी ने सभी बेटे और बेटियों को वैदिक धर्म की दीक्षा से आलौकित किया। हम समस्त आर्य समाज सदस्यों को गर्व है, कि माता जी के पुत्र अशोक सहगल जी आर्य समाज के वर्तमान प्रधान है। जो बात दवा से न हो सके, माँ-बाप की दुआ से होती है। उनके प्रति मन में श्रद्धा हो तो बात खुदा से होती है।

- श्री विकास मेहता जी

बद्रीनाथ बजाज जी का पावन जन्मोत्सव

जन्म 14-08-1934
निर्वाण 31-07-2001

हमारे प्रेरणा स्रोत स्व. श्री बद्रीनाथ बजाज जी के जन्मोत्सव पर संत्संग हाल में डा. महेश विद्यालंकार जी ने कहा कि जिस मनुष्य को चिरकाल तक लोग सेवाभाव तथा परोपकार के कारण याद करते है। सम्पूर्ण वसुन्धरा उनसे पुण्यवती हो जाती है। श्री बजाज साहब ने समाज परिवार बेटे-बेटीयों, पुत्रवधु एवं दामाद को बहुत बड़ी परम्परा एवं विरासत दे गये हैं।

इस अवसर पर आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी ने कहा - वह ऐसे महामानव थे, जिनका पुरुषार्थी जीवन सदैव परिवार और समाज के लिए प्रेरणादायी बना रहेगा। वह मानवता के सच्चे उपासक थे। पारस्परिक प्रेम और छल-कपट रहित व्यवहार उनके जीवन का मूलमंत्र था।

जिसको गिरते देखा तुमने आगे बढ़ उठाया ।
मान दिया मानव सेवा को सादर शीश झुकाया।

- श्री यज्ञपति उपाध्याय जी

जो कभी आंखो में बसते थे, अब हरदम हृदय में रहते है

स्व. सुरेन्द्र सहगल जी की पावन स्मृति में -

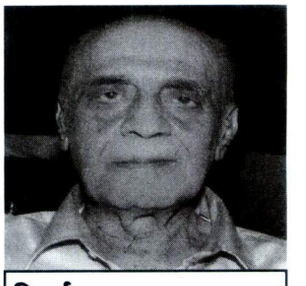

निर्वाण 22-08-2013

22 अगस्त 2017 को प्रातः कालीन आर्य समाज राजेन्द्र नगर में समस्त परिवार की ओर से यज्ञ, भजन एवं प्रवचन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी ने कहा कि सुरेन्द्र सहगल जी को वैदिक धर्म में सहज अभिरूचि उन्हें अपने माता-पिता से विरासत में मिली थी। महर्षि दयानन्द के प्रति उनके मन में अखण्ड श्रद्धा थी। ऋषि भक्ति के भजन बड़ी तन्मयता से सुनाते थे। भक्ति भाव की ऐसी भव्यधारा प्रवाहित होती थी कि श्रोताओं के हृदय आनन्द रस से पूरित हो जाते थे।

-रमेश भम्बानी जी

हमारे प्रेरणा स्रोत स्व. डॉ. सत्यव्रत जी

डॉ. सत्यव्रत वैद्य जी की पावन स्मृति में 9 सितम्बर 2017 को प्रातः कालीन आर्य समाज राजेन्द्र नगर में सपरिवार लोगों ने मिलकर यज्ञ किया आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी ने कहा कि डॉ. सत्यव्रत जी बड़े ही सरल सोम्य मृदुल स्वभाव के थे। विलक्षण मेधा सम्पन्न, शान्त स्वभाव तथा उदार हृदय वाले पुरुषार्थी प्रिय व्यक्ति थे। एवं आर्य समाज राजेन्द्र नगर के अपार सहयोगी थे।

-ज्ञान प्रकाश जी (उपमंत्री आर्य समाज)

शोक समाचार विनम्र श्रद्धांजलि

श्री ओमप्रकाश मेहतानी
(आर्य समाज राजेन्द्र नगर के सदस्य) का निधन ।
श्री राजेश दुरेजा जी
(राकेश दुरेजा जी के छोटे भाई) का निधन ।
आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान्
प्रो. राम विचार आर्य जी का निधन ।

वेद प्रचार, श्रावणी पर्व एवं छात्रवृत्रि वितरण समारोहोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली–60 का हर वर्ष की तरह श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में वेदप्रचार, श्रावणी पर्व एवं छात्रवृत्ति वितरण समारोह 10 अगस्त से 13 अगस्त तक बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिसमें सामवेदीय बृहद् महायज्ञ प्रसिद्ध वैदिक कर्मकाण्ड के विद्वान् आचार्य गवेन्द्र जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न किया गया तथा लगातार चार दिनों तक श्री अंकित शास्त्री जी के मधुर भजनों का श्रवण किया और आर्य जगत् के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य राजू वैज्ञानिक एवं आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने वेद प्रवचनों के द्वारा सभी आर्य जनों को मन्त्रमुग्ध किया इसके अतिरिक्त इस महोत्सव पर आर्य समाज के कार्यकारिणी के सदस्य एवं उपप्रधान श्री सुरेश चुघ जी के सानिध्य में वेद एवं गीता के मन्त्र व श्लोकों की व्याख्या प्रतियोगिता कनिष्ठ एवं वरिष्ठ वर्गों में सम्पन्न की गई इसके अलावा पूर्णाहुति एवं समापन समारोह रविवार 13 अगस्त 2017 को आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी की अध्यक्षता में, मुख्य वक्ता आर्य जगत् के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् एवं मनीषी आदरणीय डॉ. महेश विद्यालंकार जी के द्वारा गुरुकुलों एवं स्कूलों के छात्र एवं छात्राओं को जीवनोपयोगी अति महत्वपूर्ण बातों से अवगत कराया गया एवं प्रतियोगिता विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया एवं प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए और आर्य समाज राजेन्द्र नगर की तरफ से मासिक छात्रवृत्ति पाने वाले लगभग 60 छात्रों को छात्रवृत्तियां प्रदान की गई तथा आर्य समाज के प्रधान श्री अशोक सहगल जी ने महोत्सव में आये हुए अतिथि, विद्वान्, महानुभावों का हृदय से आभार व्यक्त किया।

–नरेन्द्र मोहन वलेचा (मंत्री)

भारत सरकार में केन्द्रीय मन्त्री बनाए जाने पर डा. सत्यपाल सिंह जी को

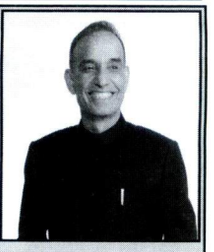

आर्य समाज राजेन्द्र नगर
नई दिल्ली की ओर से हार्दिक बधाई ।
– अशोक सहगल, प्रधान
– नरेन्द्र मोहन वलेचा, मंत्री
– सतीश कुमार , कोषाध्यक्ष

आर्य स्त्री समाज राजेन्द्र नगर के द्वारा मनाई गई हरियाली तीज

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों से 400 बहिनों ने लिया भाग जिसके अन्तर्गत यज्ञ भजन एवं प्रवचन हुए एवं ऋषि लंगर की व्यवस्था थी। कार्यक्रम का संचालन आदर्श सहगल जी ने किया व धन्यवाद प्रधाना श्रीमती सावित्री शर्मा जी ने किया।

–श्रीमती ललिता कुमार जी (मंत्राणी)

- **दिल्ली की समस्त आर्य समाजों में आर्य समाज राजेन्द्र नगर ने बाजी मारी मैं प्रथम स्थान देता हूँ ।** – डा. महेश विद्यालंकार जी
- **हम साधनों की कमी नहीं होने देगें गुरुकुलों के लिए करते रहेगें सहयोग ।** – श्री अशोक सहगल जी (प्रधान)
- **आर्य समाज राजेन्द्र नगर द्वारा विद्यार्थियों को प्रतिमास देगें छात्रवृत्ति का सहयोग ।** – सतीश मैहता जी
- **सच्ची सेवा का सुनहरा अवसर है आर्य समाज राजेन्द्र नगर ।** – नरेन्द्र वलेचा जी (मंत्री)
- **मेरा सारा जीवन समर्पित है आर्य समाज के लिए ।** – सुरेश चुघ जी
- **अपने लिए तो सारी दुनिया जीती है– किन्तु दूसरों के लिए जीना एक श्रेष्ठ कर्म है यह श्रेष्ठ कर्म ही सच्चा धर्म है ।** – श्रीमती चित्रा नाकरा जी, प्रधानाचार्य डी.ए.वी. स्कूल विकासपुरी
- **11 कुण्डीय विराट यज्ञ को देखकर मेरा हृदय हुआ प्रसन्न ।** – श्रीमती उमा बजाज जी
- **समस्त कार्यक्रम को देखकर हर तरफ खुशी–खुशी है।** –भीष्म लाल जी, सम्पादक अखण्ड दिल्ली

6 दिवसीय वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली द्वारा संचालित आर्य स्त्री समाज (बहावलपुर) में 6 दिवसीय वेद प्रचार का कार्यक्रम हर्षोल्लास सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा अनिल शास्त्री जी थे। उनके ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न कराया गया। एवं अमृता आर्या जी के मधुर भजन हुए वेदोपदेश आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री एवं आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी के हुए। प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

–जनक चुघ (मन्त्राणी)

R.N. DEL BIL/2007/22120, DL (C)-14/1181/2011-2013

ओ३म्

आर्य समाज के समस्त सदस्य एवं डॉ. धर्मवीर जी ध्वजारोहण करते हुए।

ध्वजगान करते हुए ब्रह्मचारीगण

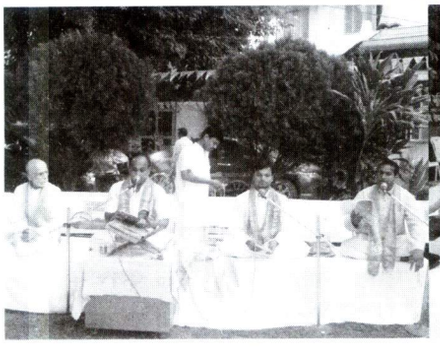

आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी यज्ञ कराते हुए।

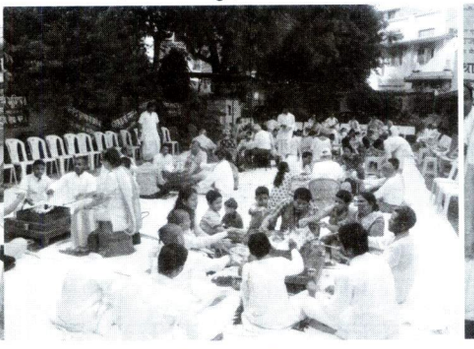

यज्ञ करते हुए सभी आर्यजन ।

गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को छात्र वृत्ति प्रदान करते हुए।

गुरुकुल टंकारा के ब्र. विवेक आचार्य को प्रथम स्थान प्राप्त करने पर पुरस्कृत करते हुए।

गीता श्लोक एवं वेद मंत्र भाषण प्रतियोगिता में अनेक गुरुकुलों से आये ब्रह्मचारीयों के सथ आर्य समाज के पदाधिकारीगण।

श्रोत्रागण प्रवचन श्रवण करते हुए।

कार्यक्रम के अन्त में सभी का धन्यवाद करते हुए प्रधान श्री अशोक सहगल जी।

Printed and published by **Sh. N.M. Walecha** Secretary on behalf of Arya Samaj, Rajinder Nagar and printed at Gurmat Printing Press, 1337, Sangatrashan, Pahar Ganj, New Delhi-55 Ph. : 23561625 and published at Arya Samaj, Rajinder Nagar, New Delhi-110060. ***Editor :*** **Achariya Gavende Sastri**